Loans Granted by Nationalised Banks to Engineering and medical Graduates

6833. SHRIMATI BHARGAVI THANKAPPAN : Will the Minister of FINANCE be pleased to state :

(a) the number of Engineering and Medical Graduates, who applied for loans from the nationalised banks since nationalisation in Kerala; and

(b) the number of the applicants who were granted loans and the amount of loan granted ?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN) : (a) and (b). For the purpose of compiling data regarding advances, 'Engineering and Medical Graduates' are not treated as a separate category; these get covered, depending upon the nature of the projects, either under 'small-scale industries' or under 'professionals and self-employed persons'. The number of borrowal accounts and the amounts outstanding in regards to these two categories in Kerala state as at the end of December 1971 was as follows :

Category	No. of borrowal accounts	Amount Outstanding (Rs. in lakhs)
1. Small Scale industries	3797	1331.86
2. Professionals & self-employed persons	4442	51.56

12.10 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

REPORTED CIA ACTIVITIES IN THE BORDER DISTRICTS OF RAJASTHAN BY AMERICAN RESEARCH SCHOLARS

श्री जगन्नाथ राव जोशी (शाजापुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर गृह कार्य मंत्री का ध्यान दिलाता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दे :

"संयुक्त राज्य अमरीका के विदेश विभाग और रक्षा मंत्रालय में पाकिस्तान डेस्क से सम्बन्धित श्री रिचर्ड एन० ब्ल्यू० और श्री डेरल ए० फोहरिब द्वारा, जो राजस्थान विश्वविद्यालय में शोध कार्य कर रहे हैं, बीकानेर, गंगानगर सीमान्त जिले में की जा रही सी० आई० ए० की गतिविधियों के समाचार"

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI K. C PANT) : Of the two individuals mentioned, Dr. Darrel A Frohrib has not been granted any visa nor is there any information of his having visited the country. Mr. Richard Newton Blue was granted visa valid for 10 months' stay in India up to 20th July, 1972 for undertaking research on some aspects of agricultural administration (with special reference to Rajasthan). He was staying at Jaipur and is known to have visited Bikaner in November 1971 for sight-seeing. There is no information of his having visited Ganganagar District. Nothing adverse has come to the notice of Government with regard to his activities.

श्री जगन्नाथ राव जोशी : अध्यक्ष महोदय, गृह कार्य मंत्री का वक्तव्य पढ़ कर मुझे बड़ा दुख हुआ है। पिछले दो दिनों में राजस्थान की विधान सभा में इसके विषय में बहुत हंगामा हुआ है और कई पहलु सामने आये हैं। इस स्थिति में यह वक्तव्य बहुत त्रुटिपूर्ण और असमाधानकारक है।

जहां तक सी० आई० ए० की एक्टिविटीज का सम्बन्ध है, वे केवल [illegible] देश में

[श्री जगन्नाथ राव जोशी]

हैं, ऐसी बात नहीं है। वे दुनिया भर में चलती हैं। उसका जाल कितना प्रभावी होता है, इसके भी कई उदाहरण सामने आये हैं। इससे पूर्व भी इस आशय के समाचार मिलते रहे हैं कि अपने देश में भी इनकी एक्टिविटीज चलती है। दो साल पूर्व राज्य सभा में एक सवाल का जवाब देते हुए उस समय के गृह-कार्य मन्त्री, श्री चव्हाण ने स्वीकार किया था कि एशिया फाउंडेशन को अमरीका के खुफिया विभाग से धन मिलता है, यह पता लगने के बाद हमने उस के खिलाफ कार्यवाही की है। इतना ही नहीं, इस साल 13 अप्रैल को राज्य सभा मे एक सवाल का जवाब देते हुए श्री सुरेन्द्रपाल सिंह ने कहा कि जो व्यक्ति अमरीकी जासूसी करते हुए पकड़ा गया, उसके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। वास्तव में दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है, किन्तु लगता है कि इस सरकार की आदत दूध से जलने के बाद भी छाछ को उबाल कर पीने की है।

नागालैंड में भी सी० आई० ए० की एक्टिविटीज चलती हैं। ढाका के पतन के बाद दो तीन व्यक्ति प्रशिक्षण पाते हुए पकड़े गये थे। उसके विषय में रूस के "प्रावदा" ने लिखा कि इसमें सी० आई० ए० का हाथ है। हमारे देश में जो कुछ होता है, उसकी जानकारी दूसरों को है। लेकिन पूछने पर हमें बताया जाता है कि एक व्यक्ति को वीसा मिला था और दूसरे को नहीं मिला। इन दोनों सज्जनों को लेकर इतना हंगामा हुआ। क्या राजस्थान के मुख्यमंत्री को मालूम नहीं है कि वह जयपुर में हैं ही नहीं? या क्या पाकिस्तानियों की तरह अमरीकी भी हिन्दुस्तान में बिना वीसा के रहने लगे हैं? मंत्री महोदय के वक्तव्य में कहा गया है:

"He visited Bikaner in November 1971 for sight seeing."

इस बारे में राजस्थान के मुख्यमंत्री कहते हैं:

Mr. Khan said he knew there were CIA agents in the University.

राजस्थान के मुख्य मंत्री ने यह भी कहा है:

The Chief Minister Said Mr. Blue wrote several letters to the Chief Secretary, Rajasthan seeking approval of his project or seeking a letter of introduction to visit some of the areas. But the Chief Secretary refused to do so till the Union Government cleared the project.

राजस्थान के मुख्य मंत्री को भी पता नहीं कि केन्द्र ने उसको क्लीयरेंस दे दी है। आगे चलकर वह कहते है:

He would write to the Union Government that in future it should not approve any project for research without consulting the State Government.

मंत्री महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा है कि श्री ब्लू साइट-सीइंग के लिये गये हैं। किन्तु राजस्थान के मुख्यमंत्री कहते हैं:

The American visited Kota and Bikaner for certain research work and met certain officers including the District Collector.

क्या यह साइट-सीइंग है? उन्होंने खुले तौर पर कहा है कि वह डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर को मिले।

अमेरीकन पीस कोर में भी सोलह व्यक्ति काम करते हैं, श्री ब्लू उसके प्रमुख के रूप में काम करता है। उन सोलह

आदमियो की गतिविधियो के बारे मे पुलिस की रिपोर्ट की माग की गई है और कहा गया है कि वह रिपोर्ट एडवर्स है । जब उनकी गतिविधियो के बारे मे ऐसे आरोप लगाये गये हैं, तो मन्त्री महोदय तत्सम्बन्धी फाइल को देख ले ।

मि० ब्लू और मि० फोहरिब की जो शिक्षा हुई है, उसका एग्रीकल्चर या सिचाई से कोई सम्बन्ध नही है । कम से कम सरकार को उनके एन्टेसिडेन्टस को देखने की कोशिश करनी चाहिए । उन्होने गंगानगर और बीकानेर की सिचाई-व्यवस्था, कैनाल, बडे-बडे रेत के टीलो के सम्बन्ध मे विस्तृत जानकारी और नक्शे बनाकर भेजे हैं । जब राजस्थान विधान सभा मे दो दिन तक हंगामा हुआ और अखबारो मे खबरें छपी, तो अगर मन्त्री महोदय की ओर से पूरा वक्तव्य दिया जाता, तो हम पूरी बात को समझ सकते । लेकिन मुझे दुख है कि ऐसा नही किया गया है । एसेम्बली मे जो सवाल उठाये गये, उनका कोई जवाब नही दिया गया है ।

क्या वह दूसरे सज्जन, मि० फोहरिब, यहा है ? राजस्थान के मुख्य मन्त्री ने कहा है कि उन्हे मालूम नही है कि केन्द्र ने उसको क्लियरेंस दिया है या नही । क्या यह बात सही है ? क्या मन्त्री महोदय इस बात की जानकारी लेने के लिये तैयार हैं कि पुलिस की रिपोर्ट एडवर्स है ? क्या मन्त्री महोदय को इस बात की जानकारी है या नही कि अमरीका के डिफेंस विभाग मे पाकिस्तानी डेस्क पर काम करने वाले सज्जन यहां आये हुए हैं ? क्या वह इस बारे मे पूरी जानकारी प्राप्त करेंगे और उसके खिलाफ एक्शन लेंगे या नहीं ? इस बारे में पूरी जानकारी होना बहुत आवश्यक है ।

दुनिया भर मे खुफिया विभागो की गतिविधिया छद्म रूप मे चलती है । जब ख्रुश्चेव और बुलगानिन इंगलैंड गये, तो उनका जहाज बन्दरगाह मे खड़ा था । बाद मे पता चला कि इगलेड का एक फ्रागमैन मिसिंग था । तेरी भी चुप, मेरी भी चुप के अनुसार इगलैंड इस बारे मे नही बोल सकता था । तीन साल बाद यह जाहिर किया गया कि वह फ्रागमैन रूसियो के पास है । सीमावर्ती प्रदेशो मे जासूस मिशनरियो के रूप मे आते है । जहाँ तक नागा लैंड का सवाल है, वहा मिशनरियो के द्वारा जासूसी का काम बहुत अच्छा हो सकता है । प्रोफेसरो और रिसर्च स्कालरो के रूप मे जासूसो को भेजा जाता है ।

मेरा आग्रह है कि जो बाते मैंने उठाई है, मन्त्री महोदय उनका पूरा जवाब दें । भविष्य मे ऐसी बातें न हो, इस बारे मे सतर्क रहकर ठोस कदम उठाये जाएं । यद्यपि इस बात का इस प्रश्न से सम्बन्ध नही है, लेकिन हमने देखा कि जब 3 दिसम्बर, 1971 को शाम के समय हमारे देश पर हमला हुआ, तो हमको उसका पता भी नही था । दूसरे देशो की इनटेलिजेंस को समझने के लिये हमारे पास सुपर इनटेलिजेंस होनी चाहिए । इसके अलावा कोई और चारा नही है । हमको पूरी जानकारी होनी चाहिए ।

राजस्थान मे आने के बाद उनको वीसा मिला या नही, उनके एनटेसिडेण्टस क्या है, वे क्या करते हैं, इस बारे मे पूरी जानकारी प्राप्त करके मन्त्री महोदय एक विस्तृत वक्तव्य सभा-पटल पर रखें ।

जहां तक इकबाल नारायण का सम्बन्ध है, यह जानकारी मिली है कि असल में वह मुसलमान है । हिन्दू या मुसलमान का

[श्री जगन्नाथ राव जोशी]

सवाल नही है । लेकिन अगर कोई व्यक्ति अपना नाम छिपाने की कोशिश करता है, तो जरूर उसके पीछे कुछ होगा । उदयपुर यूनिवर्सिटी मे एक कल्ला है । उसके खिलाफ भी कुछ ऐसी कार्रवाही हुई है । राजस्थान की यूनिवर्सिटी मे ऐसी बाते हो और स्वयं मुख्यमंत्री इसकी गवाही दे, तो इस स्थिति मे केन्द्र को इस तरफ पूरा ध्यान देना चाहिए और पूरी निगरानी रखनी चाहिए ।

श्री विक्रम महाजन (कागडा) : और कुछ किताबें जेम्स बाड की भी पढनी चाहिए ।

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त : अध्यक्ष महोदय, जहां भी विदेशो की ओर से इनटेलिजेन्स का खतरा होता है, चाहे वह सी० आई० ए० द्वारा हो और चाहे किसी दूसरी इनटेलिजेंस एजेन्सी द्वारा, वहा निगरानी रखी जाती है और रखी जायेगी । माननीय सदस्य ने सुपर-इनटेलिजस की बात कही है । शब्द "काउन्टर-इनटेलिजेंस" है—इनटेलिजेस और काउंटर इनटेलिजेंस ।

श्री जगन्नाथ राव जोशी : "सुपर" से मेरा मतलब ज्यादा अच्छी क्वालिटी से है ।

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त : काउंटर इनटेलिजेन्स का काम भी चलता है । माननीय सदस्य यह बात मानेगे कि इन सब बातो पर सदन में ब्यौरे से बहस नहीं हो सकती है । लेकिन इस बारे में निगरानी जरूर रखी जाती है ।

माननीय सदस्य ने एक सवाल पूछा है कि क्या राजस्थान के मुख्य मन्त्री यह नही जानते कि इनमें से एक प्रोफेसर, जिनकी चर्चा सवाल में की गई है, यानी श्री डेरल ए० फोहरिब, राजस्थान मे है या नही । राजस्थान के मुख्य मन्त्री ने भी वही वक्तव्य दिया है, जो मैं ने यहा दिया है कि वह राजस्थान में नही हैं, वह देश मे नहीं आये हैं, उनको वीसा नही दिया गया । मैं नही जानता कि इसके बाद भी माननीय सदस्य ने यह सवाल क्यो पूछा । राजस्थान के मुख्य मन्त्री ने कल अपने बयान मे यह कहा है—यह टाइम्स आफ इंडिया मे है

Mr Richard N Blue and Mr. Darrel Frohrib are engaged in a joint research project with two Indian professors. The project has not yet been cleared by the Union Government . Mr. Blue is engaged in another research project

अब जैसा मैंने बताया यह साहब जो है फोरिब इनको न विजा दिया गया न यह हिन्दुस्तान मे है, न जिस प्रोजेक्ट मे यह काम करने वाले थे उसको क्लीअरेंस दी गई, इसलिए यह प्रश्न ही नही उठता और डा० इकबाल नारायण जो लगता है कि आपके सारे स्पेकुलेशन के आधार हैं क्योंकि यह मुसलमान है, तो इनका इस प्रोजेक्ट से कोई सम्बन्ध नही है जो मि० ब्लू का प्रोजेक्ट है । दूसरे प्रोजेक्ट के साथ था जिसको कि एलाऊ नही किया गया । इसलिये इसमे कोई आधार नही है ।

अब आपने यह पूछा कि राजस्थान गवर्नमेंट से पूछना चाहिए था । तो राजस्थान गवर्नमेंट से पूछा गया । राजस्थान गवर्नमेंट से जिस वक्त विजा देने की बात आई उस वक्त भी पूछा गया और जो प्रोजेक्ट था उसके सम्बन्ध मे भी डेवलपमेंट कमिश्नर राजस्थान से पूछा गया । इसलिए ऐसी बात नहीं है कि राजस्थान गवर्नमेंट से पूछा नहीं गया ।

फिर आपने कहा कि स्टेट पुलिस ने एडवर्स रिपोर्ट इस प्रोफेसर के बारे में दी

है। कल जो राजस्थान की होम मिनिस्ट्री के स्टेट मिनिस्टर ने वक्तव्य दिया है जिसकी रिपोर्ट टाइम्स ग्राफ इण्डिया मे है, वह इस प्रकार है।

"Government had till now no information that Prof. Blue was engaged in any activity that would endanger the security of the country "

तो मैं नही जानता कि यह ऐडवर्स रिपोर्ट की बात आपको कहा से पता चली ? यह तो वहा की असेम्बली का अधिकृत वक्तव्य है जिसकी रिपोर्ट मैं आपके सामने दे रहा हू।

साइट-सीइंग की बात आपने कही। साइट-सीइंग के लिये कोई जाता है तो मैं क्या कर सकता हूँ? आप कहते है कि साइट-सीइंग के लिये गये। आप कहते हैं कि डी० एम० से क्यो मिले और पीस कोर वालो से क्यो मिले ? अब जितनी सूचना मिली है राजस्थान सरकार से या अपने सूत्रों से वह यह है कि किसी भी देश विरोधी कार्य की सूचना इनके बारे मे नही है। कोई भी देश-विरोधी चीज उन्होने नही की।

कुछ मन्दिरो मे शायद गये। तो उसमे तो आपको एतराज नहीं होना चाहिए। ...(व्यवधान) ...

यह आपने पूछा कि डिफेंस डिपार्टमेंट के हैं तो वही डिफेंस डिपार्टमेंट का जिक्र उन्होने अपने बायो-डेटा में किया है, वह यहां नहीं आये। यह प्रोफेसर ब्लू नही है, प्रोफेसर मोरिस हैं जो यहां आए ही नही।

श्री सरजू पांडेय (गाजीपुर) : कई बार यहां सी० आई० ए० की एक्टिविटीज के बारे में प्रश्न आते रहते है और काफी तादाद में हमारे देश मे ये काम कर रहे हैं। कानपुर के एक प्रोफेसर के बारे में भी कहा गया था जो आई० आई० टी० के है कि वह भी इस तरह की एक्टिविटीज में हिस्सा लेते है। उसके बारे मे आपने अपने वक्तव्य मे कुछ नही कहा। मेम्बरों ने इनका भी आरोप यहाँ लगाया था। मंत्री जी का कहना है कि हमारा काउंटर इंटैलिजेंस भी काम करता है। मै जानना चाहता हूँ कि सारी एक्टिविटीज जो हो रही है उसके बारे मे सरकार क्या कर रही है ? अभी मुझे पता चला कि इलाहाबाद मे एक रुद्र यज्ञ हो रहा है। उसमे भी सी० आई० ए० के लोग इनवाल्व्ड है। नैनीताल मे हजारों सी० आइ० ए० के लोग इंस्टीट्यूशन्ज मे, स्कूलो और कालेजो मे तथा दूसरी जगहो मे काम कर रहे है। आनन्द मार्ग का मामला आपके सामने आया। मैं जानना चाहता हू कि आखिर आपका इंटैलीजेंस कहाँ सोया रहता है। अखबारों मे बात आ जाती है। दूसरे लोगो को मालूम हो जाता हैं। लेकिन हमारी सरकार को इसके बारे मे कोई पता नही रहता। दूसरा मेरा सवाल है कि कानपुर के प्रोफेसर के बारे में जो आरोप लगाया गया है उसके बारे में सरकार की जानकारी क्या है और सी० आई० ए० की एक्टिविटीज को कर्ब करने के लिये कौन से ठोस कदम सरकार ने उठाये है, इसकी ठीक जानकारी देश को दें।

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त : मैने बताया कि कानपुर के प्रोफेसर जो थे और जो राजस्थान के प्रोफेसर थे ये दोनो मिलकर दो अमरीकन प्रोफेसर्स के साथ एक रिसर्च प्रोजैक्ट में काम करने वाले थे। उसके लिये अनुमति मांगी गई और वह अनुमति नही दी गई। इसलिये वह प्रोजैक्ट आज चालू नहीं है। इसलिए उसका कोई सवाल नही उठता।

[श्री कृष्ण चन्द्र पन्त]

जहां तक नैनीताल में सी० आई० ए० के एजेण्ट्स का सवाल हैं मुझे तो उसकी कोई जानकारी नहीं है। चूंकि आपने नैनीताल का नाम लिया और मेरा वह निर्वाचन क्षेत्र भी है तो अगर आपको जानकारी हो तो मुझे दे दें, लेकिन मुझे ऐसी कोई सूचना नहीं हैं कि हजारों एजेन्ट्स वहां घूमते हैं।

अब सी० आई० ए० की रोकथाम के बारे में एक मिशाल तो अभी दी जोशी जी ने कि एशिया फाउंडेशन को रोका गया और उसके अलावा निगरानी तो हम रखते है। कोई प्रोफेसर्स आएं तो उसमें भी निगरानी रखते हैं। जब उनकी बीसा एप्लीकेशन की स्क्रूटनी होती है उस वक्त भी सम्बन्धित सब मंत्रालयों से पूछते हैं और जो कुछ अपनी सूचना है उसको देखते हुए विदेश मंत्रालय से भी पूछा जाता है। उसके अलावा और भी जितने सम्बन्धित मन्त्रालय हैं उनसे पूछा जाता है। इस सबके ऊपर काफी निगरानी के बाद बीसा दिया जाता है। जो प्रोजैक्ट होते हैं उनको भी स्क्रूटनाइज किया जाता है। गाइड लाइन भी बनाने की बात है कि किस तरह के प्रोजैक्ट्स को एलाऊ करना चाहिए। इसलिये इस पर पूरी निगरानी रखी जाती है।

श्री कमलमिश्र मधुकर (केसरिया) : सी० आई० ए० अमरीकन साम्राज्यवाद का ऐसा एक अंग जो समूची दुनिया में अमरीकी साम्राज्यवाद की रक्षा करने के लिए काम करता है और जो भी आजादी पसन्द ताकतें हैं उनको दबाने के लिये कार्रवाई करता है। वह चाहे घाना में हो, चाहे चिल्ली हो, चाहे भारत हो। इस संदर्भ में इस बात को समझना चाहिये। राजस्थान की जो घटना है वह एक बोर्डर स्टेट की घटना है और यह कोई ऐसी घटना नहीं है कि जो केवल राजस्थान में हो रही हो बल्कि समूचे देश में ऐसी घटनाएं हो रही हैं कि सी० आई० ए० के एजेन्ट तमाम देश में फैले हुए हैं और माननीय सदस्य ने इस बात का जिक्र किया है कि कैसे शिक्षण संस्थाओं में युवकों के अन्दर, विद्यार्थियों के अन्दर, अखबार वालों के साथ और विभिन्न धार्मिक संस्थाओं सें प्रवेश करके ये अपना क्रिया कलाप चलाते है। यह भी आपको मालूम हुआ होगा कि काशी विश्वविद्यालय सें सी० आई० ए० के दो प्रोजेक्ट चल रहे थे जिसके विषय मे अभी जो नई काउ सिल बनी है उसको मालूम हुआ है और उस पर एकशन लिया गया है। वाइस चांसलर को पहले मालूम नही था। इसी तरीके से आनन्द मार्ग की घटना बिहार में हो रही हैं। वह आप जानते ही हैं। तो इतनी बड़ी घटनाएं हो रही है और जबकि आपका भी रुख अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ कुछ हो रहा हैं अपने कम्पलशन से या जिस भी कारण से तो ऐसी स्थिति में सी० आई० ए० के क्रियाकलापो के बारे में आपको और अधिक सावधान रहने की जरूरत है। जैसा बयान आपने दिया है वह बहुत संक्षिप्त है जिसमे बातों की सफाई नही हुई है। इसलिये मैं जानना चाहता हूं कि राजस्थान के मुख्य मंत्री ने जो अपने बयान में कुछ आदेश जैसा दिया है कि ऐसे सरकारी अफसरों को, जो कोई भी ऐसे कार्यकर्ता होंगे उनको सूचना देने का अधिकार नहीं होगा जब तक कि प्रायर आर्डर उनको नहीं मिले या ऐसे शोध कार्यों को जो केन्द्र चलाना चाहे तो राज्य सरकार से राय करनी पड़ेगी, ऐसा कुछ आदेश दिया है सरकारी अधिकारियों को अपनी इनफार्मेशन उन कार्यकर्ताओं को देने के बारे में, ऐसी कार्रवाई का आप समर्थन करने जा रहे हैं या नहीं और ऐसी

कारंवाइयों के लिये तमाम राज्य सरकारों को आदेश देने जा रहे हैं या नहीं कि तमाम सरकारी अधिकारी सी० आई० ए० की एक्टिविटीज में लगे हुए लोगों के साथ किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखें और जो रखें उनके ऊपर कानूनी कारंवाई की जाए, उनको ऐसे पदों से हटा दिया जाए और ऐसे लोगों को किसी प्रकार का प्रोत्साहन न दिया जाए। साथ साथ इसको भी आपने सोचा है या नहीं कि सी० आई० ए० की एक्टिविटीज को जिसमें टेलीफोन कम्युनिकेशन जितना हो रहा है उसका भी सम्बन्ध है, बैल कम्पनी के साथ आपका एग्रीमेंट है और वह इस साल खत्म होने जा रहा है, तो उसको आप फिर आगे के लिये चालू करेंगे या नहीं, इसके बारे में आपने सोचा है या नहीं ? आई० टी० टी० का सम्बन्ध बैल कम्पनी से है और चाना में जो घटनाएं हुई हैं वह आंख खोलने वाली हैं, तो मैं जानना चाहूंगा कि यह जो आई० टी० टी० के साथ बैल कम्पनी का सम्बन्ध है और हिन्दुस्तान से उसका एग्रीमेंट है उस एग्रीमेंट के समाप्त होने के बाद फिर आगे के लिये उसको आप चालू कीजिएगा या नहीं कीजिएगा ? ऐसी तमाम कार्यवाहियों को जिसके जरिये सी० आई० ए० की एक्टिविटीज का विस्तार होता है रोकने के लिये कोई काम्प्रीहेंसिव बिल लाकर ऐसा कानून क्या आप बनाने जा रहे हैं जिसके जरिये इसको रोका जा सके या यह समझते हैं कि जो कानून है वही पर्याप्त है और उसी से यह एक्टिविटीज रोकी जा सकती हैं सी० आई० ए० की ? इस बात का स्पष्टीकरण आप कीजिए।

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त : अध्यक्ष महोदय, मैं समझा नहीं कि यह जो हमारे सामने सवाल पेश है उस के ऊपर तो कोई सवाल पूछा नहीं उन्होंने, एक जनरल बात पूछी है और मैंने कहा कि सी० आई० ए० हो या दूसरी कोई एजेंसी हो उसके ऊपर हम निगरानी रखते हैं। इन्होंने कहा कि राजस्थान की घटना जैसी घटनाएं सारे देश में हो रही हैं तो राजस्थान में तो कोई घटना हो ही नहीं रही है। यही तो मैंने आपको बताया। अब आप उसमें कुछ देखना चाहें जो नहीं हो रहा है तो मैं उसके लिए क्या करूं ? बिहार की जो घटना बताई या दूसरी जगहों के बारे में बताया, उस बारे में मेरे पास कोई सूचना नहीं है। (व्यवधान) बैल कम्पनी के एग्रीमेंट के बारे में भी मेरे पास कोई सूचना नही है। जहां तक सरकारी कर्मचारियो के सम्बन्ध में आपने कहा है, आप जानते हैं वे आफिशियल सीक्रेसट् एक्ट से बन्धे हुए हैं। चाहे किसी तरह की कोई गोपनीय सूचना हो, तो यह उन का फर्ज है कि उन को सतर्क रहना चाहिये। यह नियम की बात है।

MR. SPEAKER: Trouble arises if States also start discussing such matters within the jurisdiction of Parliament and clash of views is there. It will not be there if they do not go out of their scope as they do sometimes. I am sorry, I cannot reflect on it. But there should be some sort of co-ordination. If the States do something and we give some other version, difficulty arises.

SHRI B. K. DASCHOWDHURY (Cooch-Behar): It is the shortest statement given by the hon. Minister though the problem is very very large and it has got very wider implications. It is known to all that the Americans are having various types of secret organistions, not only the CIA, but the Federal Bureau of Investigation, the I. T. T. and various things. Those organisations and secret services conduct work even inside our country in the names of institutions or associations.

The hon. Minister has said that there is no evidence of any anti-national activities

[Shri B. K. Daschowdhury]

against the person concerned, particularly against Professor Blue. I should like to contradict the hon. Home Minister's statement and refer him to the statement given by the hon. Chief Minister of Rajasthan which is reported in the *Statesman*. Mr Khan said that he knew that there are CIA agents in the universities and in political parties who visited the United States on lecture tours and accepted huge amounts for those assignments. If it is a fact that there are CIA agents inside universities of Rajasthan and inside some of the political parties also, and other persons who have made tours of the United States allegedly on education tours or something like that and they had accepted huge sums, I would like to know from the hon Minister what action has been taken ? Am I to understand that the statement of the hon. Chief Minister of Rajasthan is not correct ? If so, which one is true ? Let the whole thing be cleared.

It is also not known on what understanding Professor Richard Blue was granted a visa for ten months for stay in India. I do not know on what basis he wanted to visit some other parts of the country, may be within Rajasthan. Is it not a fact that in the visas there are certain strict stipulations about the places to be visited in accordance with the purpose of the visa granted to any particular person. If so on what basis Mr. Blue wanted to visit certain other areas. It is said in the statement that he sought permission from the district officials to visit some other areas which are not directly connected with agricultural administration. What does the hon. Minister mean by agricultural administration ? Is it agricultural research ? Whatever that may be, was any proper enquiry conducted about the motivations or plans of Prof. Blue while he wanted to visit certain other areas ?

Thirdly, as I said ther are various other organisations under some cover for the CIA. I should like to know from the hon. Minister whether from the report of the working of such organisations, the Home Ministry or the Finance Ministry or any other wing of the Government has got a list of all those associations, organisations, institutions, cultural and others, which are getting money from foreign countries and whether they are liable to render accounts to the Government. It is strange, a few days ago I submitted a question and it came up and the answer was laid on the Table, about a particular organisation in West Bengal, Cooch Behar, a foreign missionary working for several years together spending crores of rupees in the name of Cooch Behar Refugee Service and giving lumpsums of money to various persons and there by influencing the officials and the administration. In reply to this question whether the Government are aware of the source of money which this Cooch-Behar Refugee Service are getting from foreign countries, the Government replied that they are not aware of any such thing. Then, how can he say that they are really very much vigilant and watchful about this matter ? I quite appreciate the Minister's statement that they are having not only super-intelligence but counter-intelligence but to what extent have they succeeded in checking such activities ?

According to the newspaper reports, the Chief Minister said that numerous letters and correspondence were handed over to him by Prof. Iqbal Narayan and these have been laid on the Table of the Rajasthan Assembly. What are the contents of those letters and correspondence ? According to press reports, there are certain incriminating things, which the Chief Minister did not disclose or which has not been reported. What are the contents of that correspondence and why was the matter of the correspondence not disclosed to the whole country ?

I would request the Minister to give specific replies to these questions.

SHRI K. C. PANT : I normally do not quote from newspapers. But I would

only refer to the Chief Minister's statement as it has appeared in the newspaper today because some one quoted from the newspaper and said that he has said such and such thing. My hon. friend said that the Chief Minister said something generally about CIA activities in universities, political parties and so on. But on the specific matter before us, the Chief Minister said—I am quoting from today's *Times of India*:

> "Referring to charges of anti India activity against Mr. Richard N. Blue, an American, the Chief Minister said the research scholar had not indulged in any activity prejudicial to the interest of the nation during his stay here since September last."

This is the question before us and that is why I quoted from the Chief Minister's statement as it has appeared in the newspapers. I do not have the authoritative version and that is the only reason why I am quoting from the newspaper.

The other question he asked was. during the ten months' duration where was he allowed to go etc. These projects are carefully scrutinised. It is not for us, but it is for the Education Ministry to scrutinise the projects It is for the educational experts and for the university to decide whether the research project is all right. These agencies look into this aspect of the matter and they satisfy themselves.

With regard to the general question he raised about foreign money, the House has discussed this matter on various occasions and expressed concern at the possibility of foreign money subverting our institutions and we are all united in our concern for keeping our institutions immune from such damage by any foreign money. On this question, the hon. member is aware that Government is bringing forward a Bill for the restriction on use of foreign money in India. This has been discussed in this House and the Prime Minister in her reply has said so. He referred to some letter or correspondence which the Chief Minister had not disclosed, according to him. I do not know which letter or correspondence he is referring to. We are living in a free country. Unless there is reason for suspicion, one cannot go on chasing private persons' correspondence. There must be a sense of balance in this matter. (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Shri Amar Nath Chawla —not here.

12.40 hrs.

MOTION FOR ADJOURNMENT

ALLEGED DONATION MADE BY A CALCUTTA BUSINESS HOUSE TO THE RULING CONGRESS FOR ELECTION COMPAIGN

SHRI P. K. DEO (Kalahandi): In connection with this adjournment motion, we had thought of moving some other motion.

MR. SPEAKER: I received notice of these two adjournment motions this morning. But, before I saw this motion, the news already appeared in the papers. I saw in the papers that an adjournment motion is coming.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (Gawalior): We did not give it.

MR. SPEAKER: I do not know whether it is from your sources or their own sources.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: It is their own sources.

MR. SPEAKER: This matter is being raised in various forms in this House for the last two or three days. Today I think everybody is well prepared. I saw preparation going on both sides. The Speaker is also very well prepared. The point raised